मानव आवास एवं ग्रामीण - नगरीय भू-उपयोग

डा. सुनील बाघला
अधिष्ठाता कला विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डा. मुकेश गोयल
अधिष्ठाता फिजियोथेरेपी विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध का परिचयात्मक विश्लेषण:

बठिण्डा का पुराना नाम बटिण्डा था जो भट्टी राव के सुपुत्र बालबण्ड के नाम पर पड़ा, जिसने सन् 336 विक्रमी संवत में इस क्षेत्र में राज किया था। खालिफ मोहम्मद हुसैन केअनुसार पटियाला के इतिहास में बठिण्डा का पुराना नाम बिक्रमगढ़ था। बठिण्डा पर मुगल शासक रजीया सुल्तान ने 1800 साल पहले राज किया था, जिसकी याद में यहां पर किला मुबारक बनाया गया है। महाराजा आलासिंह ने 1754 में बठिण्डा को पैप्सुराज के अधीन रखा। बठिण्डा में कुल 281 गांव है। बठिण्डा 3 तहसीलें हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार बठिण्डा की कुल जनसंख्या 13,88,859 है। जिले में कुल ग्रामीण जनसंख्या 889,308 है। इस प्रकार जिले में कुल शहरी जनसंख्या 4,98,217 है। बठिण्डा जिले में कुल पुरुष जनसंख्या 7,43,193 है और महिला जनसंख्या 6,45,328 है। बठिण्डा में 4,88,261 पुरुष और 3,56,607 महिलाएं साक्षर है। बठिण्डा में लिंगानुपात 868 है।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य:

इस क्षेत्र में होने वाले कृषि विकास योजनाओं को प्रारूप और विस्तार दिया गया है। इसके भविष्य में उपयुक्त क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से नियोजन का लाभ मिल सके। इस अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि भूमि उपयोग के लिए किन-किन संसाधनों की जरूरत है, जिससे कि इस क्षेत्र में ओर सुधार किया गया है। प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत बठिण्डा नगर के जिले में ग्रामीण एवं नगरीय भू-उपयोग का बदलता स्वरूप का अध्ययन किया गया तथा इस क्षेत्र में बदलते भू-उपयोग का दषकीय तुलनात्मक अध्ययन 2001 से 2011 के संदर्भ में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देष्य ग्रामीण एवं नगरीय भूमि उपयोग के परिवर्तन का आंकलन करना है।

शोध के लिए चयनित क्षेत्र का भू-भाग मरूस्थल में स्थित होने के कारण उष्ण कटिबन्धीय मरूस्थलीय जलवायु की विषेषता लिए हुए हंै। यहाँ तापमान ग्रीष्म काल में 49 डिग्री सेन्टीग्रेट तक पहुंच जाता है, वहीं सर्दियों में यह तापमान 1 डिग्री सेन्टीग्रेट से भी अधिक नीचे रहता है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में तापमान शून्य से नीचे जाने पर कुहासा, धुन्ध, औस व पाला गिरता है।

प्रस्तावित शोध का महत्व:

कृषि विकास को निर्धारण करने के लिए आठ चयनित चरों के बीच मैट्रिक्स तैयार कर उनका विष्लेषण किया गया। इसके अलावा शोध प्रबन्धन में दर, अनुपात, प्रतिषत, और घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर का प्रयोग शोध के सभी भागों में हुआ है। संकल्पना परीक्षण एवं समाश्रयण शोध क्षेत्र के भूमि उपयोग से उत्पादन एवं उर्वरक तथा प्रति व्यक्ति आय एवं प्रति हैक्टेयर उत्पादन में कौनसा कारक अधिक प्रभावषाली है। इस संकल्पना का परीक्षण समाश्रयण समीकरणों से किया गया है। इसके साथ-साथ प्राचीन इतिहास, क्षेत्र, धरातल और

 Copyright © 2020 Authors

निकटवर्ती क्षेत्र के सन्दर्भ में उसकी सापेक्षिक स्थिति का ज्ञान होना भी आवष्यक है। स्थिति का प्रभाव जलवायु एवं अन्य तत्वों पर पड़ता है।

प्रस्तावित शोध के सोपान:

1. □□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□
2. प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितियक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है और इन उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर प्रस्तावित शोध का विष्लेषण करने का प्रयास किया गया है।
3. प्राथमिक आंकड़ों का संकलन जिनमें भूमि उपयोग सम्बन्धी आंकड़ों का संकलन जिला भूमि अभिलेख विभाग, सांख्यिकी विभाग, मौसम विभाग, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं, प्रकाषित एवं अप्रकाषित रिपोर्टों से प्राप्त किया गया है।
4. मानचित्र और सारणियों के आधार पर भूमि उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन किया गया हैं।
5. द्वितियक आंकड़ो का संकलन स्वयं द्वारा सर्वे क्षेत्र की प्रष्नावली बनाकर सर्वेक्षण द्वारा किया गया हैं।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष:

बठिण्डा जिले में समजलवायु मिलती है। मई-जून महीने यहां सर्वाधिक गर्म रहते हैं। इन महिनों में यहाँ अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेन्टीग्रेट तक रहता है। कभी-कभी यह बढ़कर 48 डिग्री सेन्टीग्रेड तक पहुंच जाता है। शीत ऋतु (नवम्बर-मार्च) का काल है। सिंचित क्षेत्र होने के कारण यह क्षेत्र जल्दी ठण्डा हो जाता है। इसी क्रम में दिसम्बर व जनवरी माह यहां का सर्वाधिक ठण्डे माह है।

यह क्षेत्र भारतीय मानसून की दो शाखाओं (अरब सागर की शाखा एवं बंगाल की खाड़ी की शाखा) के मार्ग में पड़ने के बावजूद यहां वर्षा की मात्रा बहुत कम प्राप्त होती है इसके दो प्रमुख कारण हैं। एक तो यह समुद्र से बहुत दूर स्थित है जिससे मानसूनी हवाएं अपनी आर्द्रता मार्ग में ही समाप्त कर चुकी होती हैं। दूसरा कारण इन मानसूनी हवाओं के मध्य किसी अवरोध का न होना है, जिससे ये बिना वर्षा किये आगे बढ़ जाती हैं। इस क्षेत्र की औसत वार्षिक वर्षा 45 सेमी हैं। जिसका अधिकांष भाग ग्रीष्म कालीन मानसून से प्राप्त होता है। शीतकाल में यहां पष्चिमी चक्रवातों से थोड़ी मात्रा में वर्षा हो जाती है। जो रबी की फसल के लिए वरदान होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ:-

1. Bhattacharya,P.T. (1976) : Population in India - A Study of Inter-state Variations, New and Shastri, G.N. Delhi,
2. Bose, A. (1970) : Urbanization in India - An Inventory of Source Materials, Academic Books Ltd., New Delhi,
3. A.J. & Pillai, S.D.(1976) : Slums and Urbanization Popular Prakashan, Bombay,
4. Geddes Arthur (1941) : Half a Century of Population Trends in India -A Regional Study of Net Change and Variability, 1881-1931, The Geographical Journal Vol. 48,

 Copyright © 2020 Authors